संबत सोरह सै एकतीसा

डॉ. रामाधार शर्मा

श्री रामचरितमानस समग्र मानव जाति के लिए एक अमूल्य निधि है। जिस प्रकार श्री स्वामी शंकराचार्यजी, श्री स्वामी रामानुजाचार्यजी, श्री स्वामी रामानन्दाचार्यजी, श्री स्वामी मध्वाचार्यजी आदि आचार्यों ने प्रस्थानत्रयी का भाष्य कर अपना-अपना सिद्धान्त सिद्ध किया, ठीक उसी प्रकार सभी आचार्य अपने-अपने सिद्धान्त के अनुसार मानसजी का अर्थ लगा सकते हैं क्योंकि गोस्वामीजी ने श्री मानसजी की रचना की प्रतिज्ञा "नानापुराणनिगमागमसम्मतं .." से की है। और चूँकि ग्रन्थ का उपसंहार हुआ है :-

"पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥"

[अर्थात् परम पवित्र और पुण्यों से युक्त, पाप को हरने वाले, निरन्तर कल्याणकारी, विशिष्ट ज्ञान और भक्ति को देने वाले, माया, मोह और तत्सम्बन्धी मलों को समाप्त करने वाले, सुन्दर और निर्मल, श्रीरामप्रेमरूप जल से पूर्ण, कल्याणमय इस श्रीरामचरितमानस रूप सरोवर में जो भक्तिपूर्वक अवगाहन करेंगे, अर्थात् डूबकर इसके सिद्धान्तों का चिन्तन करेंगे, वे मनुष्य संसाररूपसूर्य की भयंकर किरणों से नहीं जलेंगे, … नहीं जलेंगे, … नहीं जलेंगे।] अतः स्पष्ट हुआ कि यह समग्र मानव जाति के लिए कल्याणकारी है।

<u>प्रश्न उठता है कि ऐसे अनुपम ग्रन्थ का प्रणयन गोस्वामीजी द्वारा कब किया गया और कब इसने संपूर्णता को प्राप्त किया</u>?

श्रीरामचरितमानस का प्रारंभ काल :-

गोस्वामीपाद के ही शब्दों में देखें –

"संबत सोरह सै एकतीसा । करउँ कथा हरिपद धरी शीसा ॥
नौमी भौम वार मधुमासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा ॥"

रा.च.मा. बाल./३४/४-५

अर्थात्, विक्रमी संवत् १६३१ के प्रारंभ में हरि अर्थात् श्रीरामजी के, तथा हरि अर्थात् वानरश्रेष्ठ श्री हनुमानजी के, एवं हरि अर्थात् श्री गुरुदेव नरहरिदास के श्रीचरणों को मस्तक पर धारण करके, मैं तुलसीदास (अवधी भाषा में) श्रीरामकथा कह रहा हूँ। चैत्र शुक्ल नवमी, मंगलवार के दिन श्री अवधपुरी में (मेरे हृदय में) यह चरित्र प्रकाशित हुआ। **<u>पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि वर्तमान खिष्टाब्दीय वर्ष गणनानुसार यह दिनाङ्क ३० मार्च १५७४ है।</u>**

<u>तत्पश्चात् प्रश्न यह उठता है कि संवत् १६३१ ही क्यों</u>? इस पर महात्माओं के भाव कुछ इस प्रकार हैं कि भगवान् श्री रामचन्द्रजी १६ कलाओं के अवतार थे- "बाल चरित यह चन्द्रमा सोरह कला निधान।" (गीतावली १।२२)। फिर रावण-वध में

उन्होंने ३१ वाणों का सन्धान किया –"आकरषेउ धनु श्रवण लगि छाँडे शर एकतीस । रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥" रा.च.मा. युद्ध./१०२/ इस तरह १६ में ३१ लगाने से जो संवत् बना उसमें श्री रामचरितमानसकथा का गोस्वामीजी के हृदय में प्रकाश हुआ।

फिर प्रश्न उठा कि नवमी तिथि ही क्यों ? यह तो रिक्ता तिथि है, क्योंकि फलित ज्योतिषियों के अनुसार चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी रिक्ता तिथि कहलाती है। परन्तु गोस्वामीजी बहुत ही उच्च कोटि के ज्योतिषी थे। फलित ज्योतिष का एक नियम यह भी है –"शनिभौमगता रिक्ता सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।" और आगे आप देखेंगे कि उस दिन शनि वृश्चिक राशि (अधिपति मंगल) में है तथा वहाँ स्वयं मंगल भी वर्तमान है।

अब रही बात मंगलवार की, तो मंगलवार परमभक्त हनुमान्जी का जन्म दिन है । मंगलवार क्रूर वारों में गिना जाता है, परन्तु दिवाकाल में यह दोषमुक्त है –"न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य दिवाकराणाम् । दिवा शशाङ्कार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥" ग्रन्थारंभ दिवाकाल में होने से मंगलवार की क्रूरता भी नहीं स्पर्श कर पाई।

अब शेष रहा यह दिखलाना कि शनि मंगल के गृह (मेष अथवा वृश्चिक) में है । अब उपरोक्त तिथि की पञ्चाङ्गीय गणना श्री अवधपुरी (अक्षांश २६।४८ उ. तथा रेखांश ८२।१४ पू.) के लिए निम्न लिखित आता है :-

सूर्योदय- ५।४४, सूर्यास्त- ६।२२, घट्यादि दिनमान -३१।३३, पुष्य नक्षत्र- ४४।२०, धृति योग- ३८।०५, बालव करण- २८।२० ।

प्रातः ५:३० बजे ग्रह स्पष्ट :-

रवि - ०।०।४२।४७, चंद्र - ३।६।४९।२९, मंगल (व.) - ७।११।२९।२७, बुध - ११।२७।३७।१२, गुरु - १।१६।५९।२५, शुक्र - १।१२।०८।२०, शनि (व.) - ७।२०।२२।४८, राहु - १।२९।५७।२५, केतु - ७।२९।५७।२५

ध्यातव्य यह है कि मध्य दिवस में कर्क लग्न ११:२४ बजे से अपराह्न ०१:४३ तक था।

श्रीरामचरितमानस का समापन काल :-

अब गोस्वामीपाद द्वारा इस रामकथा (..कलि पन्नग भरणी…) की सम्पूर्णता कब हुयी? श्री वेणीमाधवदास रचित "गोसाईं चरित" में यह संकेत मिलता है कि संपूर्णता में २ वर्ष ७ माह २६ दिन लगे तथा वह दिन था विवाह पंचमी। अब अगर यह २ वर्ष ७ माह २६ दिन को हम ३० मार्च १५७४ में जोड दें तो प्राप्त होता है **२५ नवम्बर १५७६, रविवार और यह तिथि है मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी अर्थात् विवाह पंचमी** जो बिल्कुल ठीक बैठती है। अब उस दिन का पञ्चाङ्गीय विवरण निम्न है :-

दि.मा.	तिथि	दिन	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	घं.मि.	करण	घं.मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त
२६।२०	०५	रवि	४४।१०	श्रवण	३१।१५	व्याघात	५१।१०	बव	११।२२	६:३६:११	१७:८:४१

इससे यह भी सिद्ध होता है कि वेणी माधव दास रचित "गोसाईं चरित" का संकेत तथ्य परक है और उसमें संदेह का कोई अवकाश नहीं।